दास बनकर अगुआई

मसीह चाहता है कि उसकी कलीसिया की अगुआई करने वाले ''दास बनकर अगुआई'' करें। इसकी पुष्टि मत्ती 20:25–28 से होती है जहां यीशु ने अपने प्रेरितों को अपने पास बुलाकर कहा था:

> तुम जानते हो, कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने। जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।

आइए देखते हैं कि ''दास बनकर अगुआई'' क्या है।

''दास'' और ''अगुआ'' दोनों ही शब्दों में विरोधाभास लगता है। *क्या कलीसिया के अगुवे के लिए दास बनना या सेवा करके अगुआई करना सम्भव है?* दैनिक जीवन से लिए गए निम्न उदाहरणों पर विचार करें:

माता – पिता अपने बच्चों की अगुआई दास बनकर करते हैं। किसी घर में एक नवजात बच्ची के बारे में विचार करें। उस बच्ची के आने से उस दम्पत्ति के जीवन में सब कुछ बदल जाता है। उनकी समयसारणी बदल जाती है; उनकी प्राथमिकताएं व रुचियां नई हो जाती हैं, उनका धन को खर्च करने का ढंग बदल जाता है। जब बच्ची चिल्लाती है तो मां और बाप का न केवल उसकी ओर ध्यान जाता है बल्कि वे यह देखने के लिए कि उसे कुछ तकलीफ तो नहीं हुई, उसकी ओर भागते हैं। वे बेटी द्वारा किसी भी संकेत में छोटी से छोटी मांग को भी पूरा करते हैं। उस घर का मुखिया कौन है ? स्पष्टतया माता और पिता दोनों ही उस घर के बड़े हैं। एक मसीही परिवार में बच्चे को अपने माता – पिता की आज्ञा का पालन करना सिखाया जाएगा। एक दूसरा उज़र भी सम्भव है अर्थात एक तरह से उस घर का प्रमुख वह बच्ची ही है। माता – पिता की दुनिया उसके इर्द – गिर्द ही घूमती रहती है। वे उसके स्कूल की सैर, प्यानो सीखने की कक्षाओं में जाने, पीटीए, संडे स्कूल जाने, वीबीएस (वीडियो बाइबल स्कूल) में जाने, बाइबल कैंप में सब में बलिदान करते हैं जिससे उसे आसानी हो। माता – पिता बच्चे की अगुआई करते हैं परन्तु अगुआई करने का उनका ढंग दास बनकर ही होता है।

पति अपनी पत्नियों की अगुआई दास बनकर करते हैं। एक मसीही परिवार में पति घर

का ''मुखिया'' होता है। वह अपनी पत्नी का सिर होता है और पत्नी को अपने पति के अधीन रहना आवश्यक है (इफिसियों 5:22-24)। एक अच्छे मसीही पति में नेतृत्व का कौन सा गुण होना चाहिए? ज़्या वह अपने ही भले के लिए समयसारणी बनाता, निर्णय लेता और घर को चलाता है? ज़्या उसे केवल अपनी ही चिंता है? वही आयत जो संकेत देती है कि वह पत्नी का सिर है, उसे अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करने के लिए कहती है जैसे मसीह ने कलीसिया से किया, जैसे वह अपने शरीर से अर्थात अपने आप से करता है (इफिसियों 5:25, 28, 33)। इसका अर्थ यह है कि वह उसकी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं को कम से कम उतना ही महत्व देगा जितना वह अपने आपको परिवार की अगुआई करते हुए देता है; वास्तव में, मसीह के नमूने से यह सुझाव मिलता है कि उसे उसकी भलाई को पहल देनी चाहिए। मसीही पति यह विचार किए बिना कि इससे उसकी पत्नी पर ज़्या प्रभाव पड़ेगा, कोई निर्णय नहीं लेगा। वह अपनी पत्नी की अगुआई कैसे करता है? दास बनकर!

अच्छे व्यापारी अपने कर्मचारियों की अगुआई दास बनकर करते हैं। काम करने के स्थान पर कोई बॉस यदि अपने कर्मचारियों को यह समझा ले कि ''मैं तुज़्हारी भलाई के लिए यह करना चाहता हूं'' तो वह उनसे बड़े अच्छे ढंग से काम करवा सकता है। वास्तव में यदि अगुआई करने वाले दास बन जाएं तो वे पाएंगे कि जिनकी वे सेवा करते हैं वे उल्टे उन्हीं के दास बनने और उनकी अगुआई में चलने के लिए तैयार हैं।

ज़्या यीशु को ''दास बनकर अगुआई'' करने वाले लोगों की आवश्यकता है?

नेतृत्व के बारे में यीशु की शिक्षा ज़्या थी? इसका उज़र यीशु के जवाब में सुझाया जाता है जब कम से कम तीन अवसरों पर उसके चेले आपस में यह बहस कर रहे थे कि राज्य में सबसे बड़ा कौन है। यह प्रश्न तो उठना ही था। चेले जानते थे कि वे लोगों की अगुआई करेंगे और उनके लिए इस बात पर आश्चर्य करना स्वाभाविक ही था कि उनमें सबसे बड़ा कौन होगा।

मज़ी 18:1-4

पहला अवसर मज़ी 18:1-4 में मिलता है (तु. मरकुस 9:33-37; लूका 9:46-48)। ''चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?'' (आयत 1)। यीशु ने एक बच्चे को उनके सामने खड़ा करके उसका उज़र दिया। उसने कहा, ''यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं पाओगे'' (मज़ी 18:1-3)। फिर उसने कहा, ''जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।'' यीशु ने चेलों को बड़े बनने की इच्छा रखने के कारण डांटा नहीं, बल्कि उसने उन्हें सचमुच महान या बड़ा बनने का दूसरा अर्थात विनम्रता का ढंग सिखाया। यदि वे सचमुच स्वर्ग के राज्य में बड़े बनना चाहते थे तो उनके लिए विनम्र होना आवश्यक था।

विनम्रता के लिए किसी तुच्छ सी भूमिका को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना आवश्यक है (जैसे एक छोटे बच्चे की भूमिका)। इसके अतिरिक्त फिलिप्पियों 2:3-8 में यीशु के उदाहरण का इस्तेमाल करें तो विनम्र या दीन होने के लिए एक दास या सेवक के रूप में काम करने या आज्ञा मानने के लिए विशेषाधिकारों को त्यागकर अपने आपको दूसरों से छोटा समझना आवश्यक है।

मत्ती 20:20-28

दूसरा अवसर मत्ती 20:20-28 में मिलता है (तु. मरकुस 10:35-45)। ध्यान दें कि ज़्या होता है। याकूब और यूहन्ना की माता ने अपने पुत्रों के लिए विशेष स्थान की मांग की थी (आयतें 20, 21)। यीशु ने उज़र दिया कि ऐसा अधिकार देना उसके हाथ में नहीं था (आयतें 22, 23)। दूसरे चेले दोनों भाइयों पर नाराज़ हुए (आयत 24)। *तब* यीशु के कठोर शज़्द आए "*परन्तु तुम में ऐसा न होगा ...*" (आयतें 25-28)।

यीशु ने यह बात केवल याकूब और यूहन्ना के लिए ही नहीं बल्कि सब प्रेरितों के लिए कही थी। ज़्योंकि यदि बाकी दस प्रेरितों को केवल सेवा करने में दिलचस्पी होती तो उन्हें याकूब और यूहन्ना के यीशु के दाहिने या बायें बैठने से ज़्या फर्क पड़ना था? यदि हम जो भी भलाई कर सकते हों केवल वही करने में दिलचस्पी लेते हों तो किसी के प्रधान बनने या किसी बात में श्रेय लेने से हमें ज़्या फर्क पड़ेगा? अपने क्रोध से प्रेरितों ने यह दिखा दिया कि वे याकूब और यूहन्ना की तरह ही अपने लिए सज़्मान पाने के भूखे हैं।

मत्ती 20:25-28 में अपने उज़र से यीशु ने ज़्या समझाया?

(1) *स्वर्ग का राज्य संसार के राज्यों से अलग है।* संसार में लोग पद के लिए संघर्ष करते, सबसे ऊंचा पद पाने के लिए जुगाड़ लगाते, आदर और सज़्मान की इच्छा करते, अपनी प्रजा पर कठोरता से शासन करते और जब अपनी प्राप्तियों की उपेक्षा होने पर दुखी होते हैं। दूसरी ओर परमेश्वर के राज्य में, "*परन्तु तुम में ऐसा न होगा!*" केवल यही संदेश यदि हमारे मनों और हृदयों में बस जाए तो नेतृत्व की हमारी बहुत सी समस्याएं दूर हो जाएंगी!

(2) *परमेश्वर के राज्य में बड़े बनने का ढंग सेवा है।* बड़े बनने की इच्छा को बुरा नहीं कहा गया; इसे केवल नया नाम दिया गया है। आप बड़े कैसे बन सकते हैं? ध्यान दें कि आप कितने लोगों के दास बन सकते हैं, आप कितनी सेवा कर सकते हैं और कितने अच्छे ढंग से सेवा कर सकते हैं! दास बन जाइए!

(3) *यीशु के नमूने से उसके लोगों के जीवनों को अगुआई मिलनी चाहिए।* वह "इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे" (मत्ती 20:28; मरकुस 10:45)। पौलुस के शज़्द यह बताकर कि हमें "अपने आपको प्रसन्न" नहीं करना चाहिए बल्कि "हर एक अपने पड़ोसी को ... प्रसन्न करे। ज़्योंकि मसीह ने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया" (रोमियों 15:1-3) सेवा से ओत - प्रोत यीशु के जीवन को समझने में हमारी

सहायता करते हैं। पौलुस यह भी कहता है, ''वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ'' (2 कुरिन्थियों 8:9) और ''मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया'' (इफिसियों 5:25)। इस प्रकार मसीह ने दास या सेवक बनकर अगुआई करने का एक बहुत बड़ा नमूना पेश कर दिया। जो कोई भी प्रभु की कलीसिया में अगुआई करता है उसे चाहिए कि सेवा करवाने की इच्छा के बजाय सेवा करने के ढंग की तलाश में रहें। अपनी नहीं बल्कि दूसरों की सेवा की खोज में रहकर वह मसीह जैसा बन सकता है। अर्थात अपने खर्च पर दूसरों को लाभ पहुंचाने की इच्छा करना; और दूसरों से इतना प्यार करे कि वह उनके लिए मर भी सकता है।

यूहन्ना 13:1-17; लूका 22:24-30

तीसरा अवसर वह रात थी जब यीशु पकड़वाया गया था। यूहन्ना ने बताया कि यीशु ने प्रभु भोज के दौरान खाने से उठकर अपनी कमर पर एक अंगोछा बांधकर अपने चेलों के पांव धोए थे (यूहन्ना 13:1-17)। ज़्यों? यीशु के इस काम के लिए लूका 22:24-27 में संदर्भ मिलता है:

> उनमें यह वाद - विवाद भी हुआ, कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है? उस ने उन से कहा, अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार करते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होना; बरन जो तुम में बड़ा है, वह छोटे की नाईं और जो प्रधान है, वह सेवक के नाईं बने। ज़्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा या वह जो सेवा करता है? ज़्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक के नाईं हूं।

उनके पांव धोते हुए, यीशु उनमें ''एक सेवक'' की नाईं था।

यीशु के पकड़वाए जाने की रात भी उसकी मृत्यु से थोड़ा पहले, इस तथ्य के बावजूद कि उसने पहले भी इस सवाल का जवाब दे दिया था, चेले अभी भी उसी प्रश्न पर बहस कर रहे थे! लगता है कि उन्हें समझ नहीं आई थी! लूका के अनुसार यीशु ने उन्हें लगभग वैसा ही उज़र दिया जो उसने पहले दिया था। परन्तु यूहन्ना के अनुसार यीशु ने उससे अधिक किया। उसने उनके पांव धोए और फिर कहा:

> मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से। तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो (यूहन्ना 13:15-17)।

उसने उन्हें दिखाया कि राज्य में ''सबसे बड़ा'' बनने की चिंता करने के बजाय उन्हें एक दीन सेवक, सबसे छोटे काम, उन लोगों की ओर से भी जिनसे लगता है कि उन्होंने समझा

नहीं या परवाह नहीं की या उनके विरोधी होंगे, छोटे से छोटा काम किया।

इन तीनों अवसरों पर जब यीशु ने चेलों को इस प्रश्न पर बहस करते हुए देखा कि उनमें से सबसे बड़ा कौन होगा तो उसने संकेत दिया कि उन्हें तो सेवक बनकर अगुआई करनी है। यदि वे जो यीशु के अधिकार से परमेश्वर की प्रेरणा से बात कर सकते थे, सेवक बनकर अगुवे बनने थे तो ज़्या आज वह कलीसिया के अगुओं से वही नहीं चाहता?

''दास बनकर अगुआई'' करने के लिए ज़्या आवश्यक है?

इसलिए कलीसिया के अगुवे ''सेवा करने वाले अगुवे'' होने चाहिए। इसका ज़्या अर्थ है? दास अगुवे होने के लिए ज़्या करना आवश्यक है?[1]

अपने आपको दास मानना

सेवक बनकर अगुआई करने के लिए आवश्यक है कि किसी मण्डली के अगुवे ''सबसे पहले'' अपने आपको मण्डली के सेवकों या दासों के रूप में देखें। उदाहरण के लिए ऐल्डर अपने आपको सज़्मान का पद पाने वालों के रूप में देखना चाहते होंगे; वे निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सदस्यों को उनकी सेवा करनी चाहिए। यदि वे सेवक अगुवे हैं तो वे सेवा करवाने, सज़्मान पाने या अपनी भूमिका के लिए प्रशंसा पाने की उज़्मीद न रखें। इसके बजाय वे अपने आपको मण्डली में सेवा और इसकी सहायता करने वालों के रूप में देखें, ताकि सदस्य उनसे अच्छे ढंग से सेवा करना सीख लें। (देखें इफिसियों 4:11, 12.) वे अपने पद को एक अवसर के रूप में देखेंगे न कि निर्देश या आज्ञा देने के लिए। हर मसीही को आत्मिक रूप में स्वर्ग में जाने के लिए आत्मिक रूप से वैसा ही देखने में उसकी सहायता करेंगे ''जैसा उसे होना चाहिए।'' लोगों से काम करवाने का उनका ढंग ''मैं तुज़्हें आदेश देता हूं'' वाला नहीं बल्कि ''मैं आपकी ज़्या सहायता कर सकता हूं?'' वाला होना चाहिए।

लोगों जैसे बनना

दूसरा, सचमुच सेवक अगुवे अपने आपको उस झुंड से जिसकी वे अगुआई करते हैं ''मैं/वे'' अर्थात ''मैं अच्छा हूं; वे बुरे हैं; मैं समर्पित हूं; उनमें उत्साह नहीं है; मैं बाइबल को जानता हूं; वे बाइबल नहीं जानते'' वाले व्यवहार से अपने आपको ऊंचा नहीं मानते। बल्कि वे अपने आपको उस झुंड का एक भाग मानते हैं। वे यह नहीं कहते कि ''तुम अपना काम नहीं कर रहे हो'' बल्कि यह कहते हैं कि ''हम अपना काम नहीं कर रहे।'' एज़्रा ने इस सज़्बन्ध में एक अच्छा नमूना पेश किया जब उसने पाया कि यहूदी लोग कनानियों की पुत्रियों से विवाह करके अपने आपको उस देश के लोगों से अलग करने के लिए परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं। एज़्रा की प्रतिक्रिया इस प्रकार थी:

> यह बात सुनकर मैंने अपने वस्त्र और बागे को फाड़ा, और अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोचे, और विस्मित होकर बैठा रहा। ...

> परन्तु सांझ की भेंट के समय मैं वस्त्र और बागा फाड़े हुए उपवास की दशा में उठा, फिर घुटनों के बल झुका, और अपने हाथ अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फैलाकर कहा, हे मेरे परमेश्वर! मुझे तेरी ओर अपना मुंह उठाते लाज आती है, और हे मेरे परमेश्वर! मेरा मुंह काला है; ज़्योंकि हम लोगों के अधर्म के काम हमारे सिर पर बढ़ गए हैं, और हमारा दोष बढ़ते - बढ़ते आकाश तक पहुंचा है। अपने पुरखाओं के दिनों से लेकर आज के दिन तक हम बड़े दोषी हैं ... (एज्रा 9:3-7)।

बेशक इसका कोई संकेत नहीं है कि एज्रा ने स्वयं उस देश की किसी महिला से विवाह किया हो, परन्तु उसने इस घटना का उल्लेख ऐसे किया जैसे उसी ने यह सब किया हो। उसकी प्रतिक्रिया के कुछ भाग को इस्राएल में सामुदायिक जागृति भी कहा जा सकता है परन्तु यह स्पष्ट है कि एज्रा ने अपने आपको उन लोगों में गिना जिनकी वह अगुआई करता था। आज कलीसिया के अगुओं को चाहिए कि वे अपने आप को उन लोगों में मानें जिनकी अगुआई वे सेवक अगुवे बनने के लिए करते हैं।

दूसरों को आगे रखना

तीसरा, कलीसिया के अगुओं को चाहिए कि वे सदस्यों की भलाई करने को पहल दें। वे अपने आपको प्रसन्न करने के लिए नहीं बल्कि मसीह की तरह दूसरों को प्रसन्न करने के लिए काम करें (रोमियों 15:1-3)। ''निदान हम बलवानों को चाहिए, कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें; न कि अपने आपको प्रसन्न करें। हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिए सुधारने के निमिज़ प्रसन्न करे। ...''

अगुओं के लिए मूसा ने एक नमूना ठहराया था। जब जंगल में इस्राएलियों के पाप के बाद परमेश्वर ने उन्हें नाश करने की धमकी देकर मूसा को एक बड़ी जाति बनाने के लिए कहा था तो उसने उनके लिए यह कहते हुए बिनती की थी कि ''हाय, हाय, उन लोगों ने सोने का देवता बनवाकर बड़ा ही पाप किया है। तौभी अब तू उनका पाप क्षमा कर नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे'' (निर्गमन 32:31, 32)। मूसा उनका दोष अपने ऊपर नहीं ले सकता था, इसलिए परमेश्वर ने कहा, ''जिसने मेरे विरुद्ध पाप किया है उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूंगा'' (निर्गमन 32:33)। परन्तु, मूसा ने दिखा दिया कि जिन लोगों की अगुआई वह कर रहा था, उनका भला उसके अपने भले से अधिक महत्वपूर्ण था (तु. रोमियों 9:2, 3)।

सेवक अगुओं के निर्णय केवल अगुओं की प्राथमिकताओं या जो कुछ भी अगुओं की भलाई के लिए हो, पर नहीं, बल्कि झुंड की भलाई पर केन्द्रित होने चाहिए। उनका उद्देश्य हर काम और निर्णय व कलीसिया के लाभ के लिए ही करना होना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि ऐल्डर रविवार की आराधना सभा प्रात: दस बजे आरज़्भ करना चाहते हैं लेकिन मण्डली के दूसरे सदस्य इसे नौ बजे आरज़्भ करना चाहते हैं तो कलीसिया की भलाई के लिए समय सदस्यों की प्राथमिकता के अनुसार निर्धारित किया जाना चाहिए, चाहे प्राचीनों को यह समय सुविधाजनक न लगे।

सेवा करने के लिए प्रयास करना

चौथा, कलीसिया के अगुओं को इस काम के लिए अपना समय देकर प्रयास करना चाहिए ज़्योंकि यह *काम* है! जैसे दास की ज़िम्मेदारी काम करना ही होती है; वैसे ही कलीसिया में सेवक अगुवे का कर्ज़व्य या भूमिका काम करना है। पौलुस ने कहा है, ''यह बात सत्य है, कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले *काम* की इच्छा करता है'' (1 तीमुथियुस 3:1)। पौलुस ने यह नहीं कहा कि ऐसा ऐल्डर ''बड़े महत्व,'' ''बड़े आदर,'' या ''शान बढ़ाने'' वाले रुतबे की इच्छा करता है। प्राचीन या ऐल्डर के रूप में सेवा करने के लिए काम करना आवश्यक है!

वास्तव में, यदि कोई पुरुष जिसे ऐल्डर नियुज़्त किया गया था यदि प्रशंसा ही चाहता हो और कलीसिया की सेवा करने की उसकी कोई इच्छा न हो तो उसे पता चलेगा कि सेवक अगुवे की भूमिका को अलग नहीं किया जा सकता है। वह देखेगा कि ऐल्डर के काम में सज़्मान कम और काम (सेवा) अधिक है। जहां तक ''आदर'' की बात है, उसे पता चलेगा कि यदि स्थानीय कलीसिया का काम अच्छे ढंग से होता है तो इससे प्रचारक की सराहना होती है और यदि कोई गड़बड़ी होती भी है तो इससे ऐल्डरों की बदनामी होती है। मनुष्यों से प्रशंसा पाने के बजाय, उसे उस काम में आम तौर पर घंटों तक सभाएं, देर रात तक काम, शारीरिक काम, निराश और परेशान सदस्यों से समय - समय पर मिलना, लोगों द्वारा स्वागत न होना, निर्बल और अविश्वासी लोगों के प्रति चिंता या घबराहट कि लोग बदलेंगे नहीं, *कलीसिया में नेतृत्व करने के लिए सेवा आवश्यक है!*

दूसरों के साथ कोमलता से पेश आना

पांचवां, अगुओं के लिए मण्डली के साथ कोमलता और दयालुता से पेश आना आवश्यक है। वह अगुआ नहीं हो सकता जो दूसरों की सेवा करने के साथ - साथ घमण्ड, हेकड़ी या कठोरता रखता हो। कलीसिया के अगुवे उनके साथ जिनकी सेवा करने के लिए उन्हें ठहराया गया है, कठोरता से व्यवहार करने के बजाय पौलुस प्रेरित से सबक ले सकते हैं।

पौलुस प्रभु की कलीसिया की मण्डलियों का एक महान अगुआ था और उसका दावा था कि उसे उन्हें आज्ञा देने का अधिकार है। वह उनकी अगुआई कैसे करता था? ज़्या वह उन्हें आज्ञा देता रहता था? ज़्या वह उनके साथ कठोरता से पेश आता था? उसके पत्र पढ़कर हमें पता चलता है कि वह बड़े कोमल शज़्दों का प्रयोग करता था। वे हमेशा उन लोगों के भले के लिए होते थे, जिन्हें सज़्बोधित किया जाता था। सेवक अगुवे के एक अच्छे चित्रण के लिए, 1 थिस्सलुनीकियों 2:5-12 देखें:

> ज़्योंकि तुम जानते हो, कि हम न तो कभी लल्लोपज़ो की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिए बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है। और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से। परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों

का पालन – पोषण करती है, वैसे ही हमने भी तुज़्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है। और वैसे ही हम तुज़्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, पर अपना अपना प्राण भी तुज़्हें देने को तैयार थे, इसलिए कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे। ज़्योंकि, हे भाइयो, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो, कि हम ने इसलिए रात दिन काम – धन्धा करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया, कि तुम में से किसी पर भार न हों। तुम आप ही गवाह हो: और परमेश्वर भी, कि तुज़्हारे बीच में जो विश्वास रखते हो हम कैसी पवित्रता और धार्मिकता और निर्दोषता से रहे। जैसे तुम जानते हो, कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव करता है, वैसे ही हम तुम से हर एक को भी उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे। कि तुज़्हारा चाल – चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुज़्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।

''जिस तरह माता अपने बालकों का पालन पोषण करती है'' वैसे ही सेवक अगुवे भी मण्डली के साथ कोमलता से पालन – पोषण करते हैं। वे उनके लिए उन्हें अपना आप दे देते हैं ज़्योंकि जिनकी वे अगुआई करते हैं, ज़्योंकि वे उन्हें बहुत प्रिय हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे काम को पूरा करने के लिए रात – दिन एक कर देते हैं। कलीसिया के लिए नमूना पेश करने के लिए उनका व्यवहार पवित्र, ईमानदारी वाला और निष्कलंक होता है। जिनकी अगुआई वे करना चाहते हैं, उनके साथ वे हमेशा ''एक पिता की तरह जो अपने बच्चों का पालन पोषण करता है'' दयालुता से पेश आते हैं। सच्चे सेवक अगुओं का लक्ष्य मसीही लोगों की परमेश्वर के योग्य जीवन जीने में अगुआई के लिए सहायता करना होता है।

नमूना देकर अगुआई करना

छठा, सेवक अगुओं के लिए नमूना पेश कर अगुआई करना आवश्यक है। वे लोगों को केवल रास्ता ही नहीं बताते बल्कि यीशु की तरह उनके आगे चलकर उन्हें मार्ग भी दिखाते हैं। (देखिए 1 पतरस 5:3.) जो आदमी इतना अच्छा है कि वह कलीसिया के भवन को साफ करने के लिए अपने हाथ गंदे नहीं करता, इतना ''आत्मिक'' है कि भोजन करने के बाद बर्तन नहीं धोता, या ''महत्वपूर्ण लोगों'' के साथ इतना व्यस्त है कि उसके पास ज़रूरतमंद लोगों के लिए समय ही नहीं है, उसे एक ऐल्डर के रूप में सेवा करने के लिए नहीं कहा जाना चाहिए। वह एक सेवक अगुआ नहीं है।

कलीसिया के अगुओं को सदस्यों से कभी वह काम करने के लिए नहीं कहना चाहिए जो वे कर नहीं रहे, उन्होंने किया न हो या जिसे वे करना नहीं चाहते! सिपाही ऐसे किसी अधिकारी की बात नहीं मानेंगे जो यह कहता है, ''उस पहाड़ी को आदेश देकर शत्रु की वह मशीनगन ले आओ! मैं यहां से खड़ा होकर देखता हूं यहां से साफ दिखाई देता है।'' वे तो ऐसे अधिकारी की मानेंगे जो कहे, ''मेरे पीछे आओ! हम वह गन लेने जा रहे हैं!'' पुरानी कहावत यहां उपयुज़्त लगती है: ''जो बात आप स्वयं नहीं जानते, उसकी शिक्षा दूसरों को नहीं दे सकते; जहां आप स्वयं नहीं जाते वहां दूसरों को नहीं ले जा सकते।''

सारांश

अब तक हमने जो कुछ भी कहा है उसका निष्कर्ष शायद हम कुछ इस तरह से निकाल सकते हैं:

कलीसिया में सेवक अगुवे ...

... सेवा कराने के बजाय सेवा करने की तालाश में रहते हैं।

... उच्च स्थान, शक्ति या सम्मान नहीं, सेवा के अवसर ढूंढ़ते हैं।

... समझते हैं कि अगुआई देने का काम वे कलीसिया के लाभ के लिए कर रहे हैं; अर्थात कलीसिया उनके लिए नहीं बल्कि उन्हें कलीसिया के लिए काम करना है।

... अपने आपको मण्डली का भाग मानते हैं, उसके अधिकारी नहीं।

... झुंड की तुलना में अपनी चिंता कम करते हैं।

... मण्डली की बेहतरी के लिए जो कुछ भी करना हो, उसे करने के लिए प्रेम से प्रेरित होते हैं।

... उनके लाभ के लिए जिनके लिए अगुआई करते हैं, अपने आप को बलिदान करने, यहां तक कि मरने को भी तैयार रहते हैं।

... महसूस करते हैं कि अगुआई करना एक काम है और इसे करने के लिए वे समय देते और प्रयास करते हैं।

... अगुआई के लिए उनकी ओर देखने वालों के साथ कोमलता से पेश आते हैं।

... बताने के बजाय खुद करके या नमूना देकर अगुआई करते हैं; वे जो काम स्वयं नहीं करना चाहते, उसे अनुयायियों से भी करने को नहीं कहेंगे।

ज़्या दास बनकर अगुआई करना प्रभावकारी है? 1991 में केन अडेलमैन ने सेना रखने के विपरीत, सब स्वयंसेवक सैनिक दलों के महत्व की प्रशंसा करते लेख में, जॉयंट चीफ़ ऑफ़ स्टाफ के चेयरमैन कोलिन पावेल को उद्धृत किया:

> खाड़ी में सेनाएं भेजने से पहले ही, जनरल पॉवेल ने शान से कहा था कि हमारी सेनाएं अच्छा प्रदर्शन कर सकती हैं। वे जानते थे कि उन्हें तैयार करना कोई रहस्यमयी बात नहीं थी:
> ''यदि आपके पास ऐसे योग्य लोग हैं जो अच्छी शुरुआत कर सकते हैं; यदि आप उन्हें अच्छी तरह शिक्षित करते हैं; यदि आप उन्हें हथियारों का अतिरिक्त सामान देते हैं; यदि आप उनसे एकजुट होकर (टीम के रूप में) काम करवा सकते हैं; यदि हर टीम को NCO (नॉन कमांडिंग ऑफ़िसर) और ऐसे अधिकारी दें जो उनकी और उनके परिवार की सम्भाल कर सकें; यदि उन्हें अहसास हो जाए कि वे अमेरिकी लोगों के लिए लड़ रहे हैं; और यदि उन्हें लगे कि अमेरिकी लोगों को उन पर यकीन है, तो ये बच्चे आपके लिए कुछ भी कर सकते हैं।''[2]

जनरल पॉवेल के कुछ शब्दों को बदल देने पर यह बात मसीही स्थिति में बहुत अच्छी तरह से फिट बैठती है: यदि वे जो कलीसिया की अगुआई करते हैं यह मानें कि वे योग्य लोगों की

अगुआई कर रहे हैं: तो वे हर सम्भव अच्छी शिक्षा देते हैं, वे सेवा के लिए आवश्यक हथियार उपलब्ध कराते हैं, यदि वे सदस्यों और उनके परिवारों के प्रति रुचि दिखाते हैं और यदि वे उस कारण के लिए मसीही लोगों की विश्वास में अगुआई करते हैं जिसके लिए वे काम कर रहे हैं तो मण्डली मसीह के लिए जो कुछ भी वे कहेंगे करेगी।

पाद टिप्पणियां

[1]जो कुछ ''ऐल्डर अगुआई कैसे करते हैं'' पर पिछले पाठ में कहा गया है, वही यह समझने में भी हमारी सहायता करता है कि एक सेवक अगुआ होने का क्या अर्थ है। [2]''वोलंटियर फोर्सेस स्ट्रेंथन यू.एस.,'' *द टेनेसियन,* फरवरी 5, 1991, 7ए।